B-2
L-34
MIH

उग्रवादी

जनजातीय विद्रोह :-

जनजातीय विद्रोहों के कारण -

• ब्रिटिश साम्राज्य विस्तार के क्रम में अंग्रेजों की पहुँच जनजातीय क्षेत्रों में भी होने लगी और इसी सन्दर्भ में आदिवासी समाज की सामुदायिक सम्पत्ति की अवधारणा को अंग्रेजों ने नष्ट करना शुरू कर दिया जो जनजातीय वर्ग के लिए किसी आघात से कम नही था।

• अधिक से अधिक भू राजस्व की चाहत के क्रम में अंग्रेजों ने वन जनजातीय क्षेत्रों को भी लगान वसूली से जोड़ा और कृषि के वाणिज्यीकरण से प्रेरित होकर इन क्षेत्रों की परम्परागत अर्थव्यवस्था को नष्ट करने लगे।

• जैसे- जैसे ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार जनजातीय क्षेत्रों में होता गया वैसे- वैसे पुलिस न्यायालय व अन्य आधुनिक प्रशासनिक तंत्र स्थापित किए जाने लगे अर्थात प्रशासनिक व्यवस्था के अन्तर्गत प्रकृति में मुक्त जीवन में विश्वास करने वाले जनजातीयों पर प्रतिबंध लगाया जाने लगा और "वन कानून तथा आबकारी कानून" को लागू किए जाने से आदिवासियों की जीवन शैली में प्रत्यक्ष हस्तक्षेप किया जाने लगा।

KGS GLOBAL STUDIES IAS KHAN SIR

• अंग्रेजों ने अपने विस्तार के क्रम में अवसंरचनात्मक विकास तथा जनजातीय क्षेत्रों में प्रशासनिक पकड़ बनाए रखने के लिए बाहरी तत्वों "दिकू" जैसे ठेकेदार, साहूकार आदि को बसाना शुरू कर दिया जिन्होंने मासूम जनजातियों का आर्थिक, दैहिक, व नैतिक शोषण करना शुरू कर दिया जिससे इस वर्ग में असंतोष बढ़ता चला गया।

• सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक मामलों में भी बाहरी हस्तक्षेप को जनजातीय वर्ग बर्दाश्त करने को तैयार नही था। उदाहरण स्वरूप मारिया प्रथा (नरबली) को रोकने से असंतुष्ट होकर खोण्ड जनजाति ने विद्रोह कर दिया और इसके साथ ही धर्म परिवर्तन भी जनजातीय विद्रोहों का एक प्रमुख कारण बना।

प्रभाव :-

• जनजातीय विद्रोहों ने वास्तव में ब्रिटिश शासन प्रणाली और उनके औचित्य पर ही प्रश्नचिन्ह खड़ा कर दिया यद्यपि जनजातीय विद्रोहों का क्रूरता से दमन कर दिया गया किन्तु ब्रिटिश सत्ता को अपने शासन के दौरान निरंतर इतने उग्र और प्रभावी विद्रोहों का सामना करना पड़ा जिसकी अंग्रेजों ने कभी कल्पना भी नही की होगी।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning
KHAN SIR

• जनजातीय विद्रोहों का एक महत्वपूर्ण आयाम यह रहा है कि ये ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध लगातार उभरते रहे अर्थात इन विद्रोहों का एक दीर्घकालिक इतिहास रहा है और ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ भारतीयों के असंतोष को इन विद्रोहों ने बड़े ही मुखर रूप से व्यक्त किया।

• जनजातीय विद्रोह ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान सबसे उग्र और हिंसक रूप में सामने आए और ये इतने प्रभावी साबित हुए कि ब्रिटिश सरकार को इन क्षेत्रों में विशेष कानून बनाने हेतु विवश होना पड़ा उदाहरण स्वरूप संथाल विद्रोह के बाद अंग्रेजों को संथाल परगना विशेष कानून लागू करना पड़ा

• भारतीय राष्ट्रवाद को प्रज्वलित करने में भी जनजातीय विद्रोहों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता और जिस तरह अंग्रेजों ने इन विद्रोहों को कानून व्यवस्था का प्रश्न और अलग-थलग विद्रोहों को बताने की कोशिश की, इससे भी इन विद्रोहों के प्रति अंग्रेजों का भय स्पष्ट हो जाता है।

वस्तुतः जनजातीय विद्रोहों को राष्ट्रीय संघर्ष की मुख्य धारा से पृथक कर नहीं देखा जाना चाहिए उदाहरण स्वरूप 1855-56 के संथाल विद्रोह के बाद भारत

KGS IAS

के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहे जाने वाले महान 1857 का विद्रोह हो या फिर गाँधी के सविनय अवज्ञा / असहयोग आन्दोलन के समय होने वाला रूपा विद्रोह ही क्यों न हो

जनजातीय विद्रोह इतने प्रभावी साबित हुए कि कुछ समय के लिए जनजातीय क्षेत्रों से ब्रिटिश शासन का प्रभाव लुप्तप्राय हो गया। उदाहरण स्वरूप बिरसा मुंडा के नेतृत्व में मुण्डा विद्रोह में अंग्रेजों को घुटने टेकने को विवश कर दिया था।

संथाल विद्रोह - 1855-56

1793 में स्थायी बंदोबस्त लागू होने के बाद जमींदारों का हस्तक्षेप संथालों के परम्परागत निवास मिदनापुर, हजारीबाग व भागलपुर जैसे क्षेत्रों में क्रमशः बढ़ने लगा तो संथाल राजमहल की पहाड़ियों व जंगली क्षेत्र में प्रवेश कर गए। यह नया क्षेत्र पहाड़, पठार व जंगल से भरपूर था जिसे संथालों ने अपनी कड़ी मेहनत से जमीन को समतल बनाकर कृषि योग्य बना दिया किन्तु जब यहाँ भी औपनिवेशिक सत्ता व उसके एजेंट के रूप में जमींदारों ने भू स्वामित्व का दावा किया और लगान वसूली करने लगे तो संथाल अब असंतुष्ट हो उठे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

• जमींदारों के साथ-साथ धीरे-धीरे इस क्षेत्र में ठेकेदारों व साहूकारों जैसे अन्य बाहरी तत्व भी प्रविष्ट होने लगे और इन मासूम संथालों को अपने जाल में फंसा कर उनका आर्थिक व नैतिक शोषण करने लगे अतः संथालों ने महसूस किया कि उनकी अथक मेहनत और विशिष्ट जीवन शैली इन बाहरी तत्वों "दिकू" के कारण नष्ट होने लगी है और यहाँ का प्रशासन भी इन शोषणकारी तत्वों का ही साथ दे रहा है अतः अब विद्रोह के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं रह गया था।

• सिद्धो व कान्हू के नेतृत्व में लगभग 15 हजार संथालों ने तीर कमान व भालों से ब्रिटिश सत्ता के तोपों व बंदूकों से युक्त सैनिकों का कड़ा विरोध किया जिसकी कल्पना अंग्रेजों ने भी नहीं की थी।

• स्मरणीय है कि इसी समय डलहौजी के नेतृत्व में रियासतों का अंधाधुंध विलय किया जा रहा था जिससे ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ एक महान विद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार होने लगी थी जिसे संथाल विद्रोहियों ने और अवश्यंभावी बना दिया अतः ब्रिटिश शासन किसी भी तरह संथाल विद्रोह का दमन करने को तत्पर हो उठा और संथालों के विरुद्ध एक युद्ध छेड़ दिया

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

जिसमें लगभग दस हजार संथाल शहीद हो गए। इस तरह 1855-56 का संथाल विद्रोह इस सन्दर्भ में हमारे संघर्ष का एक ऐतिहासिक अध्याय बन जाता है कि उसने औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध उग्र संगठित विद्रोह का संकेत दे दिया तो दूसरी तरफ संथालों ने अंग्रेजों को यह मानने हेतु विवश कर दिया कि उनके अधिकारों में हस्तक्षेप करना अनुचित था। इसी सन्दर्भ में 1856, अनुच्छेद 37 के द्वारा संथाल परगना टेनेंसी एक्ट लागू किया गया और आजादी के बाद भी 1949 में यह ऐसा विशेष अधिकार जारी रहा।

मुंडा विद्रोह - 1899 - 1900

- मुंडा जनजातीय विद्रोहों का भारतीय इतिहास के औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध संघर्ष में विशिष्ट स्थान रहा है बिरसा मुंडा के करिश्माई नेतृत्व में जब यह घोषणा कर दी की "मैं तोप के गोलों को पवित्र पानी में बदल दूँगा" और अपने आप को देवपुत्र घोषित करते हुए यह विश्वास दिलाया कि वे विद्रोह में शामिल लोगों को कोई नुकसान नहीं होने देंगे।
- बिरसा के इस कथन ने आदिवासियों पर जादुई असर दिखाया और एक व्यापक उग्र

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सत्ता विरोधी विद्रोह सामने आया उल्लेखनीय पक्ष यह भी था कि विद्रोह के लिए रणनीति बनाई गई और सभाओं का भी आयोजन किया गया जो संकेत देता है कि जनजातीय विद्रोहों के नेतृत्व में भी अब निश्चितता आने लगी है यह उलगुलान इतना प्रभावी साबित हुआ कि कई दिनों तक ब्रिटिश प्रशासन इस क्षेत्र में अनुपस्थित रहा और इस विद्रोह की तीव्रता ने ब्रिटिश शासन को इतना बेचैन कर दिया कि अंग्रेजों ने पूरी ताकत से इसका दमन कर दिया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR